पीपल बाबा

■कुमार शर्मा 'अनिल'

"बेटा! बस एक बार, एक बार चले आओ गाँव ।"

सपने में बार-बार, अपनी मजबूत शाखों को
बाहों की तरह पसारकर, बुलाते हैं पीपल बाबा ।

नींद खुलने पर देर तक, पसीने में नहाया मैं
भटकता रहता हूँ, अतीत की स्मृतियों में।।

गाँव की चौपाल पर, मजबूत हरी-भरी शाखों से
सबका अभिवादन करते, नंग-धड़ंग बच्चों को
बाहों में भर, स्नेह से दुलारते
अल्हड़ किशोरियों, सुहागनों को

शाखों पर झूला झुलाते, अंधेरा होते ही,
घर जाने की हिदायत देते
गाँव-भर के शुभचिंतक पीपल बाबा।
बेलौस गाँव !
अल्हड़ गलियों को समझाता-बुझाता,
घर की दहलीजों को मर्यादाएं बताता
खेतों को बदलते मौसम समझाता

■राजभाषा अधिकारी एवं संपादक 'नवीकरण', कार्यालय: महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) हरियाणा, चंडीगढ़

न कोई अपराध, न खून-खराबा
गाँव के गौरवशाली अतीत पर
तब कितना इतराते थे पीपल बाबा।

अब ढेरों आशंकाओं से त्रस्त
शहर के आगमन पर स्तब्ध
चकित से हैं पीपल बाबा।
वास्तु-शिल्प के हुनर का कमाल!
हुमकते सीनों से उन्नत शापिंग-मॉल
नपी-तुली सुंदर कायाओं की इमारतें
संतुलित कदमों से कैटवाक करती सडकें।

बेलौस गाँव ने चारपाई पकड़ ली है
अल्हड़ गलियाँ सिमटकर
घर के जर्जर दरवाजे की झिरी से
लालायित-सी ताक रही है
चिकनी, सपाट सड़कों की
सुगठित देहयष्टि ।

शहर मंद-मंद मुस्करा रहा है
गलियों को सपने दिखा रहा है
तुम्हें सड़कों की शक्ल में संवारा जाएगा
कच्चे मकानों, खपरैलों के सीने में
गंगा मैया का गारा नहीं
फौलादी सीमेंट और
लोहा भरा जाएगा
जिन पर नहीं होगा मौसम का असर
कब आएँगे, कब जाएँगे
हेमंत, बसंत, सावन, पतझड़
पता नहीं लगने देगा शहर।
चिंतित पीपल बाबा
बुलाते हैं मुझे बार-बार
बेटा, बस आखिरी बार
मिल जा गाँव आकर ।
मैं सोच में निमग्न हूँ
लम्बी फेहरिस्त, ढेरों काम
कैसे मिलेगी फुरसत ।
पत्नी सुझाव देती है
पच्चीस बरस नहीं गए
तो पाँच महीने और रूक जाओ
तब तक वहाँ भी पहुँच जाएंगे
मोबाइल, इंटरनेट और टेलिफोन
जी भरके कर लेना फिर बात उनसे
जो भी हों ये तुम्हारे पीपल बाबा ।

पत्नी को समझाना व्यर्थ है
गाँव जाना तो चाहता हूँ मैं
पर एक आशंका है मन में
शहर जब लील चुका होगा
पूरा का पूरा गाँव
तब क्या शर्त है कि मुझे
पीपल बाबा, वहीं चौपाल पर
शाखों से स्वागत करते मिलेंगे
और वहां उनकी जगह
नहीं होगा कोई बीयर-बार ।

राष्ट्रीय राजमार्गों का संवरता रूप

■इंजि. राज कुमार अग्रवाल

सड़कें प्रत्येक देश की नाड़ियां व शिराएं होती हैं जिन के द्वारा देश के विकास का हर कार्य होता है। देश की अर्थव्यवस्था में सड़कों का विशेष महत्व है। जिस तरह सिंधु घाटी व मोहनजोदड़ो की सभ्यता, सड़कों की नियोजित योजना के कारण जानी जाती है, ठीक उसी तरह किसी भी देश की सभ्यता व अर्थव्यवस्था भी ज्यादातर सड़कों की प्रगति से ही जानी जाती है।

भारत में सड़कों का जाल लंबाई की दृष्टि से विश्व में संयुक्त राज्य अमेरिका के बाद दूसरे स्थान पर आता है। वर्तमान में, देश में सड़कों की कुल लबाई 33.14 लाख किलोमीटर है।

हमारे देश 66590 कि.मी. लंबाई के राष्ट्रीय राजमार्गों को विश्व स्तरीय बनाने के लिए राष्ट्रीय राजमार्ग विकास परियोजना, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, प्रधानमंत्री भारत जोड़ो परियोजना एवं पूर्वोत्तर राज्य संपर्क योजना जैसी कई योजनाएं शुरू की गई हैं, जिन के सुखद परिणाम सामने आने लगे हैं। इन्हीं योजनाओं की बदौलत कई शहरों की अंदरूनी, उपेक्षित व टूटी-फूटी सड़कों पर यात्रा करते हुए राष्ट्रीय राजमार्गों (नेशनल हाईवे) पर चढ़ते ही कारों, बसों व अन्य वाहनों का शोर लय में बदला सा नजर आता है। भारत सरकार द्वारा आज-कल मुख्य राजमार्गों को छह-लेन बनाया जा रहा है, जिनकी योजना व गुणवत्ता देखकर अपने देश के इंजिनियरों पर गर्व होता है।

ऐसी ही एक अपग्रेड व विस्तार करके बनाई गई छह लेन वाली सड़क हम सभी को आकर्षित करती है व यात्रा को सुगम बनाने के साथ समय की बचत भी करती है। यह सड़क जयपुर से अजमेर, किशनगढ़, बड़ौदा होते हुए मुंबई तक जाती है। अगर आप को कभी जयपुर से किशनगढ़ तक इस राजमार्ग (जो कि नेशनल हाईवे नंबर आठ का ही एक भाग है) पर यात्रा करने का मौका मिले हो आप भी इस सड़क की प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकेंगे। पहले जहाँ जयपुर से अजमेर तक 130 कि.मी. का सफर तय करने में 4-5 घंटे लगते थे वहीं यह सफर अब आधे समय में तय हो जाता है। सफर तय करते समय ऐसा प्रतीत होता है जैसे वाहन सड़क पर चलने की बजाए बहते हुए जा रहे हों और साथ में चलते हुए ट्रैफिक की भीड़ भी महसूस नहीं होती।

इस सड़क को चौड़ा करने के साथ-साथ यात्रियों की सुविधा के लिए सुंदर व रंगीन बस -शैल्टर भी बनाये गये हैं, जो यात्रियों को इन्तजार करने व वर्षा से राहत देने के साथ-साथ गर्मी में पर्याप्त छाया भी देते हैं। यात्रा को अधिक आरामदायक बनाने के लिए जरूरत के अनुसार जगह-जगह पर स्त्री व पुरुषों के लिए अलग-अलग टायलेट भी बनाये गये हैं।

इस छह-लेन सड़क को सुंदर ढंग से बनाये गये डिवाइडर से एक आने के लिए व दूसरा जाने के लिए दो भागों में बांटा गया है। सड़क के बीचों-बीच बने इस डिवाइडर को हरा भरा रखने के लिए बहुत खूबसूरती व योजना के साथ रंग-बिरंगे सफेद, लाल व पीले फूलों वाले कनेर के पौधे लगाये गये हैं, जो आपको वाहन में बैठे हुए भी किसी सुन्दर बगिया की सैर का अनुभव देते हैं । मई-जून में वाहनों को सूर्य की तेज गर्मी से राहत दिलाने के लिए सड़क के दोनों ओर नीम के व अन्य पेड़ भी लगाये गये हैं। मौजूदा हालतों में सचमुच, जयपुर से किशनगढ़ जैसी सड़कों की आवश्यकता है, जिससे वाहनों की ईंधन खपत, टूट-फूट एवं मरम्मत तथा तीव्र गति के साथ गन्तव्य स्थल तक पहुँचने के साथ-साथ देश को प्रति वर्ष कई हजार करोड़ रुपए की बचत हो सकेगी। काश, देश की सभी सड़कों को ऐसी योजना व फंड मिल सकते।

■नजदीक राधा कृष्ण मंदिर, सुर्गापुरी, कोटकपुरा-151204

ढाक के तीन पात

■हरीश कुमार 'अमित'

दाढ़ी से हमारा बड़ा करीबी और पुराना रिश्ता रहा है। करीबी इसलिए कि यह हमारे अपने चेहरे पर विराजमान रही और पुराना इसलिए कि इससे हमने बहुत सालों तक अपने मुखड़े को सजाकर रखा। एक ज़माना था जब हमारी दाढ़ी के सब बाल तवे की तरह काले हुआ करते थे, पर धीरे-धीरे स्थिति ऐसी आ गई कि इसी दाढ़ी में एक भी काला बाल ढूंढे से मिलना मुश्किल हो गया। अलबत्ता हमारे सिर के बालों ने हमारे साथ ज्यादा बेवफाई नहीं की। वक्त के साथ-साथ वे संख्या में कुछ जरूर कम हुए, पर सफेद ज्यादा नहीं हुए।

दाढ़ी की सफेदी अक्सर हमें चिन्ता में डाल देती। हम वे दिन याद करने लगते जब यह अमावस्या की अंधेरी रात की तरह काली स्याह हुआ करती थी। हमारे दिल में कभी-कभी यह ख्याल कुलबुलाने लगता कि क्यों न इस दूध-सी सफेद दाढ़ी से छुटकारा पा लिया जाए। हालांकि दाढ़ी से पीछा छुड़ा लेने की बात सोचना जितना आसान था, उस पर अमल कर पाना उतना ही मुश्किल। हमारे दिन इसी कशमकश में गुजर रहे थे कि 'सफेद दाढ़ीवाले' कहलाए जाते रहें या दाढ़ी को साफ करवा लें। एक तरफ तो दिमाग यह सलाह देता कि ऐसी दूधिया दाढ़ी से मुक्ति पा लेने में ही समझदारी है। दूसरी तरफ वहीं दिमाग यह भी कहता कि कहीं दाढ़ी कटवाने के बाद हमारी शक्ल पर बारह बजे हुए तो नज़र नहीं आएंगे।

लेकिन एक दिन तो हद ही हो गई जब किसी व्यक्ति ने पहली मुलाकात में ही हमसे पूछ लिया कि हम रिटायर कब हुए थे। हमारे पैरों तले से जमीन खिसक गई। इस सदमें से हम अभी उबर भी नहीं पाए थे कि एक और दुर्घटना घट गई। एक दिन लोकल बस में सीट न होने पर 28-30 साल का एक युवक हमें अपनी सीट देने के लिए उठ खड़ा हुआ। हमने जब कहा कि कोई बात नहीं, हम खड़े-खड़े ही सफर कर लेंगे, तो वह कहने लगा, ''नहीं सर, आप बैठिए। आप तो मेरे पापा समान हैं।'' उस नवयुवक की यह बात सुनते ही हम गश खाकर गिरते-गिरते बचे।

अभी तो हमने अपनी उम्र के 46 बसन्त ही देखे थे। हम समझ गए कि अगर लोगों को हम इतनी ज्यादा उम्र के लगते हैं, तो इसकी वजह हमारी यह नामुराद दाढ़ी ही है।

इन घटनाओं के बाद हमारा यह इरादा और पक्का हो गया कि इस दाढ़ी से पिंड छुड़ा लेने में ही समझदारी है। यही सोच हमने शेविंग का सामान खरीदकर घर में रख दिया।

कुछ दिन बाद जब दफ्तर में तीन छुट्टियां इकट्ठी आईं तो हमने पहली छुट्टी की सुबह उस शेविंग सामान का सदुपयोग करते हुए अपनी दाढ़ी से मुक्ति पा ही ली। शीशे में खुद हमें अपनी शक्ल अपनी नहीं लग रही थी। यूं लग रहा था जैसे हम किसी और आदमी को देख रहे हों। हमारे घरवाले भी हमारी यह शक्ल देखकर हैरान से थे क्योंकि न तो हमारी श्रीमती जी ने और न ही हमारे बच्चों ने आज तक हमें दाढ़ी के बगैर देखा था।

■304, एम.एस.-4, केन्द्रीय विहार, सेक्टर-56, गुड़गांव-122003(हरियाणा)

उस दिन तो खैर हम घर से बाहर ही नहीं निकले। अगली सुबह हम झेंप के मारे सैर करने भी नहीं गए। नींद का बहाना करके बिस्तर में पड़े रहे। दिन में हर पन्द्रह-बीस मिनट बाद हम अपने चेहरे को अलग-अलग कोण से आइने में निहारते। कभी लगता कि दाढ़ी साफ करके हमने बेवकूफी की है तो कभी लगता कि दाढ़ी के बगैर हमारी शक्ल पहले से काफी अच्छी मालूम देने लगी है और हम बीस-पच्चीस साल के तो नहीं, पर तीस-पैंतीस साल के तो जरूर दिखाई देने लगे हैं।

मगर घर से बाहर निकलने में हमें अब भी काफी झेंप महसूस हो रही थी। हम भगवान का शुक्र मना रहे थे कि हमने अपनी मूँछें साफ नहीं की थीं। हमारी मूँछें हमारी (भूतपूर्व) दाढ़ी की अपेक्षा काफी हद तक काली थीं। हम इसी पशोपेश में थे कि सोमवार के दिन दफ्तर क्या मुँह लेकर जाएँगे।

लेकिन सोमवार आता, उससे पहले ही इतवार के दिन ही कुछ हो गया। उस दिन हम घर में बैठे हुए एक हाथ से अपनी हल्की-हल्की बढ़ आई दाढ़ी को सहलाते हुए अखबार पढ़ रहे थे कि हमारे एक मित्र हमारे घर पधार गए। हमें देखते ही पहले तो आश्चर्य से उनका मुँह खुले-का-खुला रह गया। फिर वे मुस्कुराते हुए कहने लगे, ''यार, अब लग रहे हो हमारे हमउम्र, वरना सफेद दाढ़ी में तुमको देखकर तो अंकल जी बुलाने का दिल किया करता था।''

अपने मित्र की बात सुनकर हमें ढाढ़स बंधा और हमने उसी समय तय कर लिया कि अगले दिन हम शेव करके ही दफ्तर जाएंगे।

पर अगले दिन दफ्तर पहुंचने पर हमें अलग-अलग लोगों से अलग-अलग तरह की बातें सुनने को मिलीं। हमारे एक मित्र तो हमें देखते ही बोले कि दाढ़ी कटवाने से हमारे सारी पर्सनेल्टी ही खत्म हो गई है। हम हैरान थे कि क्या हमारी सारी की सारी पर्सनेल्टी हमारी दाढ़ी में छुपी हुई थी। मित्र की बात सुनकर हमें गश-सा आने ही लगा था कि एक अन्य परिचित कहने लगे, ''भाई वाह, आपकी पर्सनेल्टी में तो चार चांद लग गए हैं। आपको देखकर तो लगता ही नहीं कि आप वही सफेद दाढ़ी वाले हैं।''

इसी तरह कुछ लोगों ने हमारे दाढ़ीविहीन चेहरे की प्रशंसा की तो कुछ लोगों ने हमारे नए हुलिए को एकदम से नकार दिया। कुछ लोग ऐसे भी निकले जिन्होंने हमारे इस नए हुलिए पर कोई ध्यान ही नहीं दिया और हमसे इस तरह मिले जैसे कुछ हुआ ही न हो। हम खून के घूंट पीकर रह गए। लेकिन कुल मिलाकर लोगों की प्रतिक्रिया उत्साह बढ़ाने वाली थी, इसलिए हमने शेव करना जारी रखने का फैसला कर लिया।

लेकिन कुछ दिनों बाद हमें अपनी वहीं मूंछें जोकि लगभग काली नजर आती थीं, सफेद-सफेद-सी लगने लगीं। अब हमारे मन में इन मूँछों को लेकर उधेड़बुन-सी रहने लगी कि इन्हें अपने चेहरे पर शोभायमान रहने दिया जाए या नहीं। आखिर काफी सोच-विचार के बाद हम इसी नतीजे पर पहुँचे कि इन मूँछों का बलिदान कर देने में ही भलाई है।

कुछ दिनों बाद जब दफ्तर में चार छुट्टियाँ इकट्ठी आईं तो हमने अपने मूँछ हटाओ कार्यक्रम पर अमल कर ही डाला। पर मूँछें काटने के बाद तो हमें खुद अपने आपको पहचानना मुश्किल हो गया। हम पछताने लगे कि यह क्या कर बैठे। चेहरा यूँ लग रहा था जैसे किसी स्त्री का चेहरा हो। हम एक बार फिर से घर में नजरबन्द होने की स्थिति में आ गए।

मगर घर में भी कब तक छुपकर बैठते। छुट्टियों के बाद दफ्तर तो जाना ही था। दफ्तर पहुँचने पर हमें फिर उसी तरह मिली-जुली प्रतिक्रियाएँ मिलीं जैसी दाढ़ी कटवाने पर मिली थीं। मगर हम इन प्रतिक्रियाओं से ज्यादा विचलित नहीं हुए और अपने काम में लगे रहे।

परन्तु किस्मत को शायद यह भी मंजूर नहीं था कि हम चुपचाप अपने काम में लगे रहें। हम फाइल में अपना सिर गढ़ाए बैठे थे कि एक आवाज सुनाई दी, 'अरे यार, तुम हो! मैने तो समझा कि पता नहीं कौन सा गंजा आदमी तुम्हारी सीट पर ट्रांसफर होकर आ गया है।''

हमने सिर उठाकर देखा। हमारे एक पुराने मित्र हमारी सीट के सामने खड़े मुस्कुरा रहे थे। मित्र की बात सुनकर हम कुछ चौंके, फिर यह सोचकर कि हमारे मित्र हमसे मजाक कर रहे होंगे हम उनसे बातचीत करने में मशगूल हो गए। मित्र से बाते करते हुए हमने बहाने से अपने सिर पर हाथ फेरा, तो खोपड़ी के बीचोंबीच हमें कुछ खाली-खाली सा लगा। मित्र के जाने के बाद हम सीधे बाथरूम में गए और अपने सिर को आढ़ा-तिरछा करते हुए अपनी खोपड़ी पर स्थित बालों की भौगोलिक स्थिति देखने का प्रयत्न करने लगे, लेकिन काफी कोशिशें करने के बाद भी अपनी खोपड़ी के बीचों-बीच वाली जगह को देख पाने में हम सफल नहीं हो पाए।

घर आकर हमने सबसे पहला काम यह किया कि दो शीशों की मदद से अपने खोपड़ी के बीचोंबीच के भाग को देख लेने में सफलता प्राप्त कर ही ली। लेकिन इस सफलता पर हमें कोई खुशी नहीं हुई, बल्कि हमारा दिल धक्क से रह गया। हमारे सिर के बीचों-बीच एक रुपए के सिक्के से भी बड़ी जगह गंजेपन की ओर अग्रसर हो रही थी।

अपने सिर पर उगी इस चाँद का पता चलते ही हम एकाएक अपने आपको बूढ़ा-सा महसूस करने लगे। हम बूढ़े न दिखें, इसलिए ही तो हमने अपनी प्रिय दाढ़ी और फिर मूँछों का बलिदान दिया था, पर स्थिति अब भी वैसी ही थी, यानी कि वही ढाक के तीन पात।

हिंदी एक जीवंत भाषा है। इसमें बड़ी सुरम्यता और उदारता है। हिंदी के यही तो वे गुण हैं जो इसे दूसरी भाषाओं के शब्दों और वाक्यों को आत्मसात् करने की असीम क्षमता प्रदान करते हैं। हिंदी हमें दक्षिण एशिया के देशों से ही नहीं बल्कि पूरे एशिया और मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम, ट्रिनीडाड व टोबेगो जैसे अन्य देशों के साथ भी जोड़ती है। यदि हिंदी को विश्व की एक प्रमुख भाषा बनाना है तो इसे आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी का माध्यम बनाना होगा।

-पूर्व राष्ट्रपति श्री के.आर. नारायणन